Ilm Ki Barkaten (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 252
Weekly Booklet : 252

इल्म की बरकतें

सफ़हात 25

औलाद के लिये बेहतरीन तोहफ़ा 07
तक़्लीद का सुबूत 10
आ़लिमे दीन की ता'रीफ़ 11
शाने उ़लमा व ज़बाने मुस्त़फ़ा 15

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **इल्म की बरकतें**

सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**इल्म की बरकतें**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

पेश लफ़्ज़

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! आशिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में इल्मे दीन का शौक़ पैदा करने और दीनी कुतुब का मुत़ालआ़ करने की वक़्तन फ़ वक़्तन तरग़ीब दिलाई जाती है। शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से गुज़श्ता तक़रीबन पांच साल से हर हफ़्ते एक रिसाला (Weekly Booklet) पढ़ने या Audio Book के ज़रीए सुनने का ए'लान किया जाता है, मुत़ालआ़ करने वाले ख़ुश नसीब इस्लामी भाई और इस्लामी बहन दुआ़ए अ़त्तार की बरकात भी ह़ासिल करते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़ मजलिस की जानिब से मुख़्तलिफ़ मौज़ूआ़त पर रसाइल तय्यार किये जाते हैं, 13 रबीउ़ल अव्वल 1443 हि. को हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़ की मजलिस के एक इस्लामी भाई ने अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه से मज़ीद नए मौज़ूआ़त के बारे में रहनुमाई ली तो आप ने चन्द मदनी मश्वरे इनायत फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : एह़याउल उ़लूम को न भूलना। (या'नी इस किताब को भी अपने रसाइल में शामिल करें।) क्यूं कि आप एह़याउल उ़लूम किताब को बहुत पसन्द फ़रमाते हैं। एक मदनी मुज़ाकरे में अमीरे अहले सुन्नत ने इर्शाद फ़रमाया : बहारे शरीअ़त आ़लिम बनाने वाली किताब है और फ़तावा रज़विय्या मुफ़्ती बनाने वाला है जब कि एह़याउल उ़लूम मोमिने

कामिल बनाने वाली किताब है। आप फ़रमाते हैं : बातिनी मा'लूमात के हवाले से इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुझ पर बहुत एहसानात हैं, जिस ने एहयाउल उलूम नहीं पढ़ी मुझे वोह अधूरा अधूरा सा लगता है। लिहाज़ा फ़रमाने अमीरे अहले सुन्नत पर अमल करते हुए हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मश्हूरे ज़माना, मक़्बूले आम किताब एहयाउल उलूम जो कि अरबी ज़बान में 5 जिल्दों पर मुश्तमिल है और दा'वते इस्लामी के अहम तरीन शो'बे अल मा'रूफ़ "अल मदीनतुल इल्मिय्या" ने इस किताब का उर्दू ज़बान में तरजमा भी किया है। तमाम आशिक़ाने रसूल को चाहिये कि वोह बा क़ाइदा से इस किताब का बित्तरतीब मुतालआ फ़रमाएं, اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم आप की मा'लूमात में ज़रूर इज़ाफ़ा होगा और कई फ़र्ज़ उलूम सीखने को मिलेंगे। आम अवाम की आसानी और मुतालए के लिये एहयाउल उलूम से कुछ मवाद दीगर तरमीम व इज़ाफ़े के साथ येह रिसाला पेश किया जा रहा है। (जो सिल्सिला वार चलता रहेगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه الْكَرِيْم) रिज़ाए इलाही पाने और हुसूले इल्मे दीन के लिये हफ़्तावार रसाइल का मुतालआ न सिर्फ़ मा'लूमात में इज़ाफ़े का सबब है बल्कि इस से ज़िन्दगी के अहम मसाइल के बारे में भी आगाही मिलती है। **अल्लाह** करीम हमें बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की कुतुब से मुस्तफ़ीज़ होने (या'नी फ़ैज़ पाने) की तौफ़ीक़ अता फ़रमा कर इल्म पर इख़्लास के साथ अमल करने की सआदत भी इनायत फ़रमाए।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

वस्सलाम मअल इक्राम

अबू मुहम्मद ताहिर अत्तारी मदनी عُفِیَ عَنْهُ

इल्म की बरकतें

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 23 सफ़हात का रिसाला : "**इल्म की बरकतें**" पढ़ या सुन ले उसे अपनी रिज़ा के लिये इल्मे दीन सीखने और इसे फैलाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उसे बे हिसाब बख़्श दे।
اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

हज़रते शैख़ अबुल अब्बास तीजानी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने एक तालिबे इल्म को ख़त भेजा और उस में बिस्मिल्लाह और सलातो सलाम के बा'द लिखा कि **अल्लाह** पाक का सब से बढ़ कर मुफ़ीद ज़िक्र **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दिल को हाज़िर कर के दुरूद भेजना है। बिला शुबा येह दुन्यवी और उख़रवी तमाम मक़ासिद के हुसूल का ज़ामिन और तमाम मुश्किलात का हल है और जो शख़्स इस पर अमल करेगा वोही **अल्लाह** पाक का सब से बढ़ कर बरगुज़ीदा होगा। (سعادۃ الدارین، ص109)

दस्त बस्ता सब फ़रिश्ते पढ़ते हैं उन पर दुरूद
क्यूं न हो फिर विर्द अपना اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام
मोमिनो पढ़ते नहीं क्यूं अपने आक़ा पर दुरूद
है फ़रिश्तों का वज़ीफ़ा اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

समझदार मां

करोड़ों मालिकिय्यों के इमाम, आशिक़े मदीना इमाम मालिक

बिन अनस और अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا जैसी जलीलुल क़द्र हस्तियों के उस्ताज़े मोह़तरम ह़ज़रते रबीआ़ बिन अबू अ़ब्दुर्रह़मान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अभी अपनी अम्मीजान के पेट में ही थे कि इन के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान फ़र्रूख़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बनू उमय्या के दौरे ख़िदमत में सरह़दों की ह़िफ़ाज़त के लिये जिहाद की ग़रज़ से ख़ुरासान चले गए। चलते वक़्त आप अपनी ज़ौजा के पास तीस (30) हज़ार दीनार छोड़ कर गए। 27 साल के बा'द आप वापस मदीनए मुनव्वरह आए तो आप के हाथ में नेज़ा था और आप घोड़े पर सुवार थे। घर पहुंच कर घोड़े से उतरे और नेज़े से दरवाज़ा अन्दर धकेला तो ह़ज़रते रबीआ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़ौरन बाहर निकले। जैसे ही उन्हों ने एक मुसल्लह़ शख़्स को देखा तो बड़े ग़ज़ब नाक अन्दाज़ में बोले : "ऐ **अल्लाह** के बन्दे ! क्या तू मेरे घर पर ह़म्ला करना चाहता है ?" ह़ज़रते फ़र्रूख़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "नहीं ! मगर तुम येह बताओ कि तुम्हें मेरे घर में दाख़िल होने की जुर्अत कैसे हुई ?" फिर दोनों में तल्ख़ कलामी होने लगी। क़रीब था कि दोनों दस्तो गिरेबां हो जाते लेकिन हमसाए बीच में आ गए और लड़ाई न हुई। जब इमामे मालिक رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه और दूसरे बुज़ुर्ग ह़ज़रात को ख़बर हुई तो वोह फ़ौरन चले आए। लोग उन्हें देख कर ख़ामोश हो गए। ह़ज़रते रबीआ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस शख़्स से कहा : "ख़ुदा की क़सम ! मैं उस वक़्त तक तुम्हें न छोड़ूंगा जब तक तुम्हें सुल्त़ान (या'नी बादशाहे इस्लाम) के पास न ले जाऊं।" ह़ज़रते फ़र्रूख़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने कहा : "ख़ुदा की क़सम ! मैं भी तुझे सुल्त़ान के पास ले जाए बिग़ैर न छोड़ूंगा, एक तो तुम मेरे घर में बिला इजाज़त दाख़िल हुए और फिर मुझी से

झगड़ रहे हो।" इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान फ़र्रूख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को निहायत नरमी से समझाने लगे कि बड़े मियां! अगर आप को ठहरना ही मक़्सूद है तो किसी और मकान में ठहर जाइये। आप ने फ़रमाया : "मेरा नाम फ़र्रूख़ है और येह मेरा ही घर है।" येह सुन कर आप की ज़ौजए मोह़तरमा जो दरवाज़े के पीछे सारी गुफ़्तगू सुन रही थीं, फ़रमाने लगीं : "येह मेरे शौहर हैं और रबीआ़ इन्हीं के बेटे हैं।" येह सुन कर दोनों बाप बेटे गले मिले और उन की आंखों से ख़ुशी के आंसू छलक पड़े। ह़ज़रते फ़र्रूख़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुशी ख़ुशी घर में दाख़िल हुए। जब इत़्मीनान से बैठ गए तो कुछ देर बा'द उन को वोह तीस हज़ार अशरफ़ियां याद आईं जो रवानगी के वक़्त बीवी को सोंप गए थे। चुनान्चे बीवी से पूछा कि मेरी अमानत कहां है? समझदार बीवी ने अ़र्ज़ की : "मैं ने उन्हें संभाल छोड़ा है।" ह़ज़रते रबीआ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस दौरान मस्जिदे नबवी शरीफ़ पहुंच कर अपने ह़ल्क़ए दर्स में बैठ चुके थे और शागिर्दों का एक हुजूम जिस में इमामे मालिक और ख़्वाजा ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمَا जैसे लोग शामिल थे शैख़ को घेरे हुए था। ह़ज़रते फ़र्रूख़ नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिदे नबवी शरीफ़ में गए तो येह मन्ज़र देखा कि एक ह़ल्क़ा लगा हुवा है और लोग बड़े अदबो तवज्जोह से इ़ल्मे दीन सीख रहे हैं और एक ख़ूबरू नौ जवान उन्हें दर्स दे रहा है। आप क़रीब गए तो लोगों ने आप के लिये जगह कुशादा की। ह़ज़रते रबीआ़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सर झुकाए हुए बैठे थे। इस लिये आप के वालिदे मोह़तरम उन्हें पहचान नहीं सके और ह़ाज़िरीन से पूछा : "इ़ल्म के मोती लुटाने वाले येह "शैख़ुल ह़दीस" कौन हैं?" लोगों ने बताया : "येह रबीआ़

बिन अबू अ़ब्दुर्रहमान हैं।" येह सुन कर इन्तिहाई ख़ुशी की ह़ालत में उन की ज़बान से येह जुम्ला निकला कि "لَقَدْ رَفَعَ اللّٰهُ اِبْنِی यक़ीनन **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मेरे बेटे को बड़ा अ़ज़ीम मर्तबा अ़त़ा फ़रमाया है!" फिर ख़ुशी ख़ुशी ज़ौजा के पास आए और फ़रमाया : "मैं ने तुम्हारे लख़्ते जिगर को आज ऐसे अ़ज़ीम मर्तबे पर देखा कि इस से पहले मैं ने किसी इ़ल्म वाले को ऐसे मर्तबे पर नहीं देखा।" ज़ौजए मोह़तरमा ने पूछा : "आप को अपने तीस हज़ार दीनार चाहिएं या अपने बेटे की येह अ़ज़मतो रिफ़अ़त ?" आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! मुझे अपने नूरे नज़र की शान दिरहमो दीनार से ज़ियादा पसन्द है।" वोह कहने लगीं : "मैं ने वोह सारा माल आप के बेटे की ता'लीमो तरबियत पर ख़र्च कर दिया है।" येह सुन कर आप ने ज़िन्दा दिली से फ़रमाया : "ख़ुदा की क़सम ! तुम ने उस माल को ज़ाएअ़ नहीं किया है।" (تاریخ بغداد، 8/421) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मेरे उस्ताद मां बाप भाई बहन अहले वुल्दो अ़शीरत पे लाखों सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

काश ! हर घर में कम अज़ कम एक आ़लिमे दीन हो

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इ़ल्मे दीन बहुत अ़ज़ीम ने'मत है, इसे ह़ासिल करना सआ़दत मन्दों ही का ह़िस्सा है, इ़ल्मे दीन का ह़ुसूल नफ़्ल इबादत से अफ़्ज़ल है, इ़ल्मे दीन की फ़ज़ीलत के लिये येही काफ़ी है कि आ़लिम या'नी इ़ल्म वाला होना **अल्लाह** पाक की सिफ़त है। ह़दीसे क़ुदसी है : **अल्लाह** पाक ने ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام

की तरफ़ वही फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम ! मैं अ़लीम हूं और हर साहिबे इल्म को पसन्द करता हूं। (جامع بیان العلم وفضلہ، ص70، حدیث:213)

काश ! दुन्यावी ता'लीम की बड़ी बड़ी डिग्रियां हासिल करने की सुब्हो शाम फ़िक्र करने के बजाए हुसूले इल्मे दीन का शौक़ पैदा हो जाए। माल, माल और सिर्फ़ माल ही की फ़िक्र में गुम रहने के बजाए इल्मे दीन की कसरत का शौक़ रखना चाहिये कि माल की हिफ़ाज़त हमें करनी पड़ती है जब कि इल्मे दीन हमारी हिफ़ाज़त करता है, इल्मे दीन और उ़लमाए कामिलीन के बे शुमार फ़ज़ाइल कुरआनो ह़दीस में बयान हुए हैं। मेरे शैख़े त़रीक़त, बानिये दा'वते इस्लामी अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं : मेरी ख़्वाहिश है कि हर घर में कम अज़ कम एक आ़लिमे दीन होना चाहिये। ज़हे क़िस्मत ! अपनी औलाद को ह़ाफ़िज़े कुरआन, आ़लिमे दीन बल्कि मुफ़्तिये इस्लाम बनाने का ह़सीन व अ़ज़ीम जज़्बा नसीब हो जाए कि ऐसी नेक औलाद जीते जी अपने वालिदैन का ख़ूब अदबो ता'ज़ीम करती, बुढ़ापे में उन की ख़िदमत कर के सवाबे अ़ज़ीम की ह़क़दार बनती और वालिदैन के दुन्या से रुख़्सत हो जाने के बा'द उन के लिये ईसाले सवाब कर के सदक़ए जारिया का बाइ़स भी बनती है।

वालिदैन की त़रफ़ से औलाद को बेहतरीन तोह़फ़ा

ह़दीसे पाक में वालिदैन को अपनी औलाद को इल्मे दीन सिखाने का हुक्म इर्शाद फ़रमाया गया है जैसा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इन्सान का अपने बच्चे को अदब सिखाना एक साअ़ (या'नी 4 किलो में से 160 ग्राम कम) सदक़ा करने से बेहतर है। (ترمذی، 3/382، حدیث:1958)

एक और रिवायत में है : किसी बाप ने अपने बेटे को अच्छा अदब सिखाने से बढ़ कर कोई अ़तिय्या नहीं दिया। (ترمذی،3/383،حدیث:1959) दिल में शौक़े इल्मे दीन मज़ीद बढ़ाने के लिये चन्द आयाते क़ुरआनिया और अहादीस पेश की जाती हैं। इन्हें पढ़ कर ख़ुद भी इल्मे दीन हासिल कीजिये और अपनी औलाद को भी दीन का इल्म पढ़ाइये।

अल्लाह पाक और फ़रिश्तों के साथ उ़लमाए किराम का ज़िक्रे ख़ैर

अल्लाह पाक उ़लमाए किराम की फ़ज़ीलत में पारह 3 **सूरए आले इमरान** आयत नम्बर 18 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآىٕمًۢا بِالْقِسْطِؕ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर।"

हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه येह आयत लिखने के बा'द इर्शाद फ़रमाते हैं : देखिये! **अल्लाह** पाक ने किस त़रह़ अपनी पाक ज़ात से आग़ाज़ फ़रमाया फिर फ़िरिश्तों और फिर उ़लमाए किराम का ज़िक्र फ़रमाया। शरफ़ो फ़ज़ीलत और अ़ज़मतो कमाल के लिये येही काफ़ी है। अ़ज़ीम ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : का'बे के गिर्द तीन सो साठ (360) बुत थे, जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो तमाम बुत सज्दे में गिर गए। (تفسیر قرطبی، جز:4، پ3، آل عمران، تحت الآیۃ:18، 2/32)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पारह 28 **सूरतुल मुजादलह** आयत नम्बर 11 में इर्शाद होता है : ﴿يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْۙ وَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍؕ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "**अल्लाह** तुम्हारे ईमान

वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दरजे बुलन्द फ़रमाएगा।"

उ़लमाए किराम की आ़म लोगों पर फ़ज़ीलत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : "उ़लमाए किराम आ़म मोमिनीन से 700 दरजे बुलन्द होंगे, हर दो दरजों के दरमियान 500 साल की मसाफ़त है।" (قوت القلوب، 1/241)

इल्म इबादत से अफ़्ज़ल क्यूं ?

इमाम ग़ज़ाली رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ **मिन्हाजुल आ़बिदीन** में लिखते हैं : ऐ इख़्लास और इबादत के त़लब गार ! **अल्लाह** पाक तुझे तौफ़ीक़ से नवाज़े, सब से पहले तुझे इल्म ह़ासिल करना ज़रूरी है क्यूं कि सारा दारो मदार इसी पर है। जान लो कि इल्म और इबादत दो ऐसे जौहर हैं कि लिखने वालों की किताबों, सिखाने वालों की ता'लीमात, मुबल्लिग़ीन के बयानात और ग़ौरो फ़िक्र करने वालों के ख़यालात से तुम जो कुछ देख या सुन रहे हो येह सब इन्ही दो की वज्ह से है, इल्म व इबादत ही के लिये आस्मानी किताबें नाज़िल की गईं और ह़ज़राते रुसुले किराम عَلَیۡہِمُ السَّلَام भेजे गए बल्कि ज़मीन व आस्मानों और इन की सारी मख़्लूक़ को इन दोनों ही की वज्ह से पैदा किया गया है। कुछ आगे चल कर मज़ीद लिखते हैं : बन्दे पर लाज़िम है कि वोह इन दोनों (या'नी इल्मे दीन सीखने और इबादत करने) में ही लगा रहे, इन्ही के लिये ख़ुद को थकाए और इन्ही में ग़ौरो फ़िक्र करे। पस जान लो कि इल्म व इबादत के इलावा जितने भी काम हैं सब बेकार व फ़ालतू हैं इन का कोई फ़ाएदा और ह़ासिल नहीं। (منہاج العابدین، ص 11)

ऐ आ़शिक़ाने इल्मे दीन ! ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता

है । (مسلم، ص401، حدیث:2392) एक और रिवायत में है : उ़लमा, अम्बिया के वारिस हैं । (سنن ابن ماجہ، 1/146، حدیث:223)

इस से पता चला कि जिस त़रह़ नुबुव्वत से बढ़ कर कोई मर्तबा नहीं इसी त़रह़ नुबुव्वत की विरासत (या'नी इ़ल्म) से बढ़ कर कोई अ़ज़्मत नहीं । (احیاء العلوم، 1/20)

मेरे शैखे़ त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उ़लमाए किराम से अपनी मह़ब्बत का इज़्हार अपनी ना'तिया किताब **वसाइले बख़्शिश** में यूं करते हैं :

मुझ को ऐ अ़त्तार सुन्नी आ़लिमों से प्यार है *اِنْ شَآءَاللّٰه दो जहां में मेरा बेड़ा पार है*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

तक़्लीद का सुबूत

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस ह़दीस से दो मस्अले साबित हुए : एक येह कि कु़रआनो ह़दीस के तरजमे और अल्फ़ाज़ रट लेना इ़ल्मे दीन नहीं, बल्कि इन का समझना इ़ल्मे दीन है, येही मुश्किल है । इसी के लिये फु़क़हा की तक़्लीद की जाती है, इसी वज्ह से तमाम मुफ़स्सिरीन व मुह़द्दिसीन आइम्मए मुज्तहिदीन के मुक़ल्लिद हुए, अपनी ह़दीस दानी पर नाज़ां न हुए, कु़रआनो ह़दीस के तरजमे तो अबू जह्ल भी जानता था । दूसरे येह कि ह़दीस व कु़रआन का इ़ल्म कमाल नहीं, बल्कि इन का समझना कमाल है । आ़लिमे दीन वोह है जिस की ज़बान पर **अल्लाह** और रसूल का फ़रमान हो और दिल में इन का फै़ज़ान । (मिरआतुल मनाजीह़, 1/187)

शाफ़ेई मालिक अह़मद इमामे ह़नीफ़ *चार बाग़े इमामत पे लाखों सलाम*

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

आ़लिमे दीन बनने के लिये कितना इल्म होना ज़रूरी है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से दो सुवाल हुए जो अ़र्ज़ (या'नी सुवाल) और इर्शाद (या'नी जवाब) की सूरत में पेशे ख़िदमत हैं :

अ़र्ज़ : आ़लिम की क्या ता'रीफ़ है ?

इर्शाद : आ़लिम की ता'रीफ़ येह है कि अ़क़ाइद से पूरे त़ौर पर आगाह हो और मुस्तक़िल हो और अपनी ज़रूरिय्यात को किताब से निकाल सके बिग़ैर किसी की मदद के।

अ़र्ज़ : कुतुब बीनी (या'नी किताबें पढ़ने) ही से इल्म होता है ?

इर्शाद : येही नहीं बल्कि इल्म "अफ़्वाहे रिजाल" (या'नी इल्म वालों से गुफ़्तगू) से भी ह़ासिल होता है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 58)

मदनी बहार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन ह़ासिल करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ अमीरे अहले सुन्नत के इल्मो ह़िक्मत से भरपूर सुवाल व जवाब के मक़्बूले आ़म सिल्सिले मदनी मुज़ाकरे और बयानात सुनना भी है। एक मदनी बहार पढ़िये और शौक़े इल्मे दीन पैदा कीजिये : मुरादआबाद (हिन्द) के एक इस्लामी भाई ने ख़्वाब में एक ख़ूब सूरत बाग़ देखा, जिस में सुन्नत के मुत़ाबिक़ सफ़ेद लिबास पहने, नूर बरसाते नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग सर पर इमामा शरीफ़ सजाए नमाज़ पढ़ रहे हैं। मैं इन्तिज़ार करने लगा कि येह नमाज़ मुकम्मल करें तो मैं इन से हाथ मिला कर पूछूं कि येह कौन हैं ? लेकिन जैसे ही उन्हों ने सलाम फेरा मेरी आंख खुल गई। उठने के बा'द दिल में एक अ़जीब सी राह़त और ख़ुशी

महसूस हो रही थी मगर बार बार येह ख़याल भी आ रहा था कि येह बुज़ुर्ग कौन हो सकते हैं ? उन बुज़ुर्ग की ज़ियारत की बरकत से मेरा दिल दुन्यवी झमेलों से बेज़ार हो कर नेक माहोल की तरफ़ माइल होने लगा। मुझे इल्मे दीन सीखने का शौक़ हुवा। इसी शौक़ में एक दिन आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हाज़िर हुवा। आख़िर में रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ के दौरान शुरका की आहो ज़ारी ने मेरे दिल की दुन्या बदल कर रख दी। इज्तिमाअ़ के आख़िर में एक मुबल्लिग़ ने अमीरे अहले सुन्नत के सुन्नतों भरे दो बयानात बनाम ''क़ब्र का इम्तिहान'' और ''बा हया परिन्दा'' सुनने के लिये दिये। मैं ने जब उन्हें सुना तो क़ब्रो हश्र के होलनाक मनाज़िर मेरी निगाहों में घूमने लगे, मैं ने घबरा कर तौबा की और रफ़्ता रफ़्ता दीनी माहोल के क़रीब से क़रीब तर होता गया। उन्ही दिनों कानपूर (हिन्द) में दा'वते इस्लामी का सुन्नतों भरा इज्तिमाअ़ हुवा जिस में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी तशरीफ़ लाए। जैसे ही मैं ने अमीरे अहले सुन्नत की ज़ियारत की तो मेरी हैरत की इन्तिहा न रही कि येह वोही हस्ती थीं जिन की ख़्वाब में मुझे ज़ियारत हुई थी। (नूरानी चेहरे वाले बुज़ुर्ग, स. 8) **अल्लाह पाक की अमीरे अहले सुन्नत पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।**

कितने बनाए आ़लिमो ह़ाफ़िज़ कितनों को है तुम ने संवारा

पीर मेरा पीर मेरा पीर मेरा

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

आ़लिम और ग़ैरे आ़लिम बराबर नहीं हो सकते

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जैसे गूंगा और बोलने वाला, अन्धा और आंख वाला बराबर नहीं हो सकते ऐसे ही आ़लिमे दीन और जाहिल बराबर नहीं हो सकते । **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम की **सूरतुज़्ज़ुमर**, पारह 23, आयत नम्बर 9 में इर्शाद फ़रमाता है : ﴿قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ''तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान ।''

तफ़्सीरे त़बरी में है : इस आयते मुबारका में **अल्लाह** पाक ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से फ़रमाया : ऐ मुह़म्मद ! (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) अपनी क़ौम से फ़रमा दो कि जो लोग इस बात का इ़ल्म रखते हैं कि उन के लिये अपने रब की इत़ाअ़तो फ़रमां बरदारी में क्या (अज्रो सवाब) है और उस की ना फ़रमानी में कैसे (अ़ज़ाब) हैं क्या येह लोग (मक़ामो मर्तबे में) उन के बराबर हो सकते हैं जो इन बातों का इ़ल्म नहीं रखते ? पस वोह (बे इ़ल्म) लोग बिना सोचे समझे काम करते हैं, उन्हें नेक आ'माल के सवाब का पता होता है न ही बुरे कामों के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ । पस येह दोनों क़िस्म के लोग बराबर नहीं हो सकते ।

(تفسیر طبری، پ23، الزمر، تحت الآیۃ:9، 10/621)

नौ जवान आ़लिम, जाहिल बूढ़े पर मुक़द्दम है

''कन्ज़ुद्क़ाइक़'' में है : नौ जवान आ़लिम का येह ह़क़ है कि उसे जाहिल (या'नी इ़ल्मे दीन न जानने वाले) बूढ़े पर मुक़द्दम किया जाए ।

इमाम बदरुद्दीन ऐनी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस इ़बारत की शर्ह़ करते हुए ''रम्ज़ुल ह़क़ाइक़'' में इर्शाद फ़रमाते हैं : क्यूं कि नौ जवान आ़लिम,

जाहिल बूढ़े से अफ़्ज़ल है। **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : **तरजमए कन्ज़ुल ईमान : "तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान।"** ﴿قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (پ23،الزمر، آیت:9) और इसी लिये नमाज़ में उस (नौ जवान आ़लिम) को (जाहिल बूढ़े पर) मुक़द्दम किया जाता है ह़ालां कि नमाज़ अरकाने इस्लाम में से एक रुक्न और ईमान के बा'द सब से पहला फ़र्ज़ है और शरीअ़त में जिस (या'नी उ़लमाए किराम) की इत़ाअ़त की जाए वोह मुक़द्दम है और इन्हें कैसे न मुक़द्दम किया जाए कि उ़लमाए ह़क़, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस हैं जैसा कि ह़दीसे पाक में आया है। (رمز الحقائق، کتاب الخنثیٰ، 2/285)

इल्मे दीन की शान

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बेशक ह़िक्मत ज़ी मर्तबा के मर्तबे को बढ़ाती और गुलाम को इतनी बुलन्दी अ़त़ा करती है कि वोह बादशाहों के मक़ाम को पा लेता है। (المجروحین لابن حبان، 1/472) इस ह़दीसे पाक में इल्म के दुन्यवी फ़वाइद बयान किये गए हैं और येह बात यक़ीनी है कि आख़िरत बहुत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है।

इल्मे दीन की बदौलत माल व बादशाहत मिल गई

ह़ज़रते अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلَيْهِمُ السَّلَام को इल्म, माल और मुल्क में से एक को चुनने का इख़्तियार दिया गया तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने इल्म को इख़्तियार फ़रमाया, तो उन्हें इल्म की बरकत से माल और मुल्क दोनों दे दिये गए।

(تفسیر روح البیان، پ23، الزُّمر، تحت الآیۃ:9، 8/82)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सिर्फ़ **अल्लाह** पाक की रिज़ा के लिये

इल्मे दीन हासिल कीजिये और दुन्या व आख़िरत में इस की बरकात लूटिये कि ह़दीसे पाक में है : ज़मीनो आस्मान की तमाम मख़्लूक़ आ़लिम के लिये इस्तिग़्फ़ार करती है। (ترمذی،4/312،حدیث:2691) लिहाज़ा उस से बड़ा मर्तबा किस का होगा जिस के लिये ज़मीनो आस्मान के फ़िरिश्ते मग़्फ़िरत की दुआ़ करते हों। येह अपनी ज़ात में मश्ग़ूल है और फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार में मश्ग़ूल हैं।

"आ़लिमे दीन" के सात ह़ुरूफ़ की निस्बत से उ़लमाए किराम के फ़ज़ाइल पर सात फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ **अल्लाह** पाक क़ियामत के दिन इबादत गुज़ारों को उठाएगा फिर उ़लमा को उठाएगा और उन से फ़रमाएगा : ऐ उ़लमा के गुरौह ! मैं तुम्हें जानता हूं इसी लिये तुम्हें अपनी त़रफ़ से इल्म अ़त़ा किया था और तुम्हें इस लिये इल्म नहीं दिया था कि तुम्हें अ़ज़ाब में मुब्तला करूंगा। जाओ ! मैं ने तुम्हें बख़्श दिया। (جامع بیان العلم وفضلہ،ص69،حدیث:211)

﴿2﴾ मोमिन आ़लिम मोमिन आ़बिद पर 70 दरजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है। (جامع بیان العلم وفضلہ،ص36،حدیث:84)

﴿3﴾ आ़लिम और आ़बिद के दरमियान 100 दरजे हैं और हर दो दरजों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितनी मसाफ़त सधाया हुवा उ़म्दा घोड़ा 70 साल तक दौड़ कर त़ै करता है। (جامع بیان العلم وفضلہ،ص43،حدیث:118)

﴿4﴾ आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसे चौदहवीं के चांद की तमाम सितारों पर। (سنن ابوداود،3/444،حدیث:3641)

﴾5﴿ आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसे मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना पर। (ترمذی،4/314،حدیث:2694)

येह ह़दीसे पाक लिखने के बा'द इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ग़ौर कीजिये ! हुज़ूर जाने रह़मत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने किस त़रह़ इ़ल्म को दरजए नुबुव्वत के साथ मिला दिया और कैसे इ़ल्म से ख़ाली अ़मल के मर्तबे को घटा दिया अगर्चे आ़बिद जिस इ़बादत पर मुवाज़बत (या'नी पाबन्दी) इख़्तियार किये होता है वोह इ़ल्म से ख़ाली नहीं होती वरना वोह इ़बादत ही नहीं जो इ़ल्म से ख़ाली हो। (احیاء العلوم،1/21)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : येह तश्बीह बयाने नौइय्यत के लिये न कि बयाने मिक़्दार के लिये, या'नी जिस क़िस्म की बुज़ुर्गी मुझ को तमाम मुसल्मानों पर ह़ासिल है उस क़िस्म की बुज़ुर्गी आ़लिम को आ़बिद पर या'नी दीनी बुज़ुर्गी न कि मह्ज़ दुन्यावी, अगर्चे इन दोनों बुज़ुर्गियों में करोड़हा फ़र्क़ हैं। बादशाह को रिआ़या पर सल्त़नत की, मालदार को फ़क़ीर पर माल की, जथ्थे वाले (या'नी त़ाक़त वाले) को बेकस (या'नी कमज़ोर) पर क़ुव्वत की, ह़सीन को बद शक्ल पर जमाल की बुज़ुर्गी ह़ासिल है। मगर येह बुज़ुर्गियां दुन्यवी और फ़ानी हैं, नबी को मख़्लूक़ पर दीनी बुज़ुर्गी ह़ासिल है जो अबदुल आबाद (या'नी हमेशा हमेशा) तक क़ाइम है, ऐसे ही आ़लिम को जाहिल पर, आज सिकन्दर को किसी फ़क़ीर पर मुल्की बुज़ुर्गी नहीं, मगर इमाम अबू ह़नीफ़ा को तमाम मुक़ल्लिदीन पर बे पनाह अ़ज़मत अब भी ह़ासिल है। ख़याल रहे हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को नबियों पर और दरजे की बुज़ुर्गी है, सह़ाबा पर और दरजे की, औलिया

व उ़लमा पर और दरजे की, अ़वाम पर और दरजे की, اَدْنٰی کُمْ में इस आख़िरी दरजे की त़रफ़ इशारा है। (मिरआतुल मनाजीह, 1/200)

कुछ आगे चल कर मुफ़्ती साहिब मज़ीद फ़रमाते हैं : इस से येह लाज़िम नहीं कि आ़लिम नबी के बराबर हो जाए। ख़याल रहे कि इ़ल्मे दीन या "फ़र्ज़े ऐ़न" है या "फ़र्ज़े किफ़ाया" और ज़ियादा इ़बादत नफ़्ल है, नीज़ आ़लिम का नफ़्अ़ मख़्लूक़ को है और आ़बिद का नफ़्अ़ सिर्फ़ अपने को, लिहाज़ा आ़लिम आ़बिद से अफ़्ज़ल है। आदम عَلَیْہِ السَّلَام आ़लिम थे, फ़िरिश्ते लाखों साल के आ़बिद मगर सज्दा आ़बिदों ने आ़लिम को किया। (मिरआतुल मनाजीह, 1/216)

﴾6﴿ क़ियामत के दिन उ़लमा की सियाही शहीदों के ख़ून से तोली जाएगी तो उन की सियाही ग़ालिब आ जाएगी। (تاریخ بغداد، 2/190)

﴾7﴿ क़ियामत के दिन तीन क़िस्म के लोग शफ़ाअ़त करेंगे : अम्बिया, उ़लमा और शुहदा। (سنن ابن ماجہ، 4/526، حدیث: 4313)

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीस की शर्ह़ में फ़रमाते हैं : इन तीन गुरौह के साथ शफ़ाअ़त को ख़ास करना इन की बहुत ज़ियादा फ़ज़्लो बुज़ुर्गी के सबब है वरना मुसल्मानों में से हर नेक शख़्स (मसलन सच्चा ह़ाजी, बा अ़मल ह़ाफ़िज़) के लिये (भी शफ़ाअ़त का ह़क़) साबित है। (اشعۃ اللمعات، 4/432)

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि ज़ियादा अ़ज़मत वाला मर्तबा वोह है जिस का ज़िक्र मर्तबए नुबुव्वत के साथ मिला हुवा है और येह मर्तबए शहादत से बढ़ कर है अगर्चे शहादत की फ़ज़ीलत में भी कसीर अह़ादीस मरवी हैं। (احیاء العلوم، 1/21)

आ़लिमे दीन की मह़फ़िल की बरकत से गाने वाली की तौबा

बसरा में एक इन्तिहाई ह़सीनो जमील औ़रत रहा करती थी। लोग उसे शा'वाना के नाम से जानते थे। ज़ाहिरी हुस्नो जमाल के साथ साथ उस की आवाज़ भी बहुत ख़ूब सूरत थी। अपनी ख़ूब सूरत आवाज़ की वज्ह से वोह गायिकी और नौह़ा गरी में मश्हूर थी। बसरा शह्र में ख़ुशी और ग़मी की कोई मजलिस उस के बिग़ैर अधूरी तसव्वुर की जाती थी। येही वज्ह थी कि उस के पास बहुत सा मालो दौलत जम्अ़ हो गया था। बसरा शह्र में फ़िस्क़ो फ़ुजूर के ह़वाले से उस की मिसाल दी जाती थी। उस का रहन सहन अमीराना था, वोह क़ीमती लिबास पहनती और महंगे महंगे ज़ेवरात से बनी संवरी रहती थी। एक दिन वोह अपनी रूमी और तुर्की ख़ादिमाओं के साथ कहीं जा रही थी। रास्ते में उस का गुज़र ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के घर के क़रीब से हुवा। आप **अल्लाह** के नेक बन्दे, बा अ़मल आ़लिमे दीन और आ़बिदो ज़ाहिद लोगों में से थे। आप अपने घर में लोगों को बयान इर्शाद फ़रमाया करते थे। जिस की तासीर से लोगों पर रिक़्क़त त़ारी हो जाती और वोह बड़ी ज़ोर ज़ोर से रोना शुरूअ़ कर देते और **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से उन की आंखों से आंसूओं की झड़ियां लग जातीं। जब शा'वाना नामी औ़रत वहां से गुज़रने लगी तो उस ने घर से रोने की आवाज़ें सुनीं। उसे बहुत ग़ुस्सा आया। वोह अपनी ख़ादिमाओं से कहने लगी : तअ़ज्जुब की बात है कि यहां नौह़ा किया जा रहा है और मुझे इस की ख़बर तक नहीं दी गई। फिर उस ने एक ख़ादिमा को घर के ह़ालात मा'लूम करने के लिये अन्दर भेज दिया। वोह अन्दर गई और अन्दर के ह़ालात देख कर उस पर भी ख़ौफ़े

ख़ुदा त़ारी हो गया और वोह वहीं बैठ गई। जब वोह वापस न आई तो शा'वाना ने काफ़ी इन्तिज़ार के बा'द दूसरी और फिर तीसरी ख़ादिमा को अन्दर भेजा मगर वोह भी वापस न लौटीं। फिर उस ने चौथी ख़ादिमा को अन्दर भेजा जो थोड़ी देर बा'द वापस आई और उस ने बताया कि घर में किसी के मरने पर नहीं बल्कि अपने गुनाहों पर रोया जा रहा है, लोग अपने गुनाहों की वज्ह से **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से रो रहे हैं।

शा'वाना येह सुन कर हंस पड़ी और उन का मज़ाक़ उड़ाने की निय्यत से घर के अन्दर दाख़िल हो गई। लेकिन क़ुदरत को कुछ और ही मन्ज़ूर था। जूंही वोह अन्दर दाख़िल हुई **अल्लाह** पाक ने उस के दिल को फेर दिया। जब उस ने ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को देखा तो दिल में कहने लगी : अफ़्सोस ! मेरी तो सारी उ़म्र ज़ाएअ़ हो गई, मैं ने अनमोल ज़िन्दगी गुनाहों में ज़ाएअ़ कर दी, वोह मेरे गुनाहों को कैसे मुआ़फ़ फ़रमाएगा ? इन्ही ख़यालात से परेशान हो कर उस ने ह़ज़रते सालेह़ मुर्री رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा : "ऐ इमामुल मुस्लिमीन ! क्या **अल्लाह** पाक ना फ़रमानों और सरकशों के गुनाह भी मुआ़फ़ फ़रमा देता है ?" आप ने फ़रमाया : "हां ! येह वा'ज़ो नसीह़त और वा'दे वईदें सब उन्ही के लिये तो हैं ताकि वोह सीधे रास्ते पर आ जाएं।" इस पर भी उस की तसल्ली न हुई तो वोह कहने लगी : मेरे गुनाह तो आस्मान के सितारों और समुन्दर की झाग से भी ज़ियादा हैं। आप ने फ़रमाया : कोई बात नहीं ! अगर तेरे गुनाह शा'वाना से भी ज़ियादा हों तो भी **अल्लाह** करीम मुआ़फ़ फ़रमा देगा। येह सुन कर वोह चीख़ पड़ी और रोना शुरूअ़ कर दिया और इतना रोई कि बेहोश हो कर गिर पड़ी। थोड़ी देर बा'द जब उसे

होश आया तो कहने लगी : ह़ज़रत ! मैं ही वोह शा'वाना हूं जिस के गुनाहों की मिसालें दी जाती हैं। फिर उस ने अपना क़ीमती लिबास और महंगे ज़ेवरात उतार कर पुराना लिबास पहन लिया और गुनाहों से कमाया हुवा सारा माल ग़ुरबा में तक़्सीम कर दिया और अपने तमाम ग़ुलाम और ख़ादिमाएं भी आज़ाद कर दीं। फिर अपने घर में बन्द हो कर बैठ गई। इस के बा'द वोह दिन रात **अल्लाह** पाक की इ़बादत में मसरूफ़ रहती और अपने गुनाहों पर रोती और उन की मुआ़फ़ी मांगती रहती। रो रो कर रब्बे रह़ीम व करीम की बारगाह में इल्तिजाएं करती : ऐ तौबा करने वालों को मह़बूब रखने वाले और गुनहगारों को मुआ़फ़ फ़रमाने वाले ! मुझ पर रह़म फ़रमा, मैं कमज़ोर हूं तेरे अ़ज़ाब की सख़्तियों को बरदाश्त नहीं कर सकती, तू मुझे अपने अ़ज़ाब से बचा ले और मुझे अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमा। उस ने इसी ह़ालत में चालीस साल ज़िन्दगी बसर की और इन्तिक़ाल कर गई। (حکایات الصالحین، ص74) **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

जूं ही गुनाह करने लगूं, तेरे ख़ौफ़ से फ़ौरन उठूं मैं थरथरा या रब्बे मुस्त़फ़ा
तेरी ख़शिय्यत और तेरे डर से, ख़ौफ़ से हर दम हो दिल येह कांपता या रब्बे मुस्त़फ़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

अल्लाह वाले ही डरते हैं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा अ़मल बा असर होता है, बा अ़मल उ़लमाए किराम के बयानात व तह़रीरात लोगों की ज़िन्दगियां बदल कर रख देते हैं जैसा कि अभी आप ने वाक़िए़ में सुना, ख़ौफ़े ख़ुदा

की अ़ज़ीम ने'मत के हुसूल का ज़रीआ़ इल्मे दीन है क्यूं कि इल्मे दीन की बरकत से **अल्लाह** पाक की मा'रिफ़त हासिल होती है। **अल्लाह** पाक ने बे शुमार मख़्लूक़ पैदा फ़रमाई। तमाम मख़्लूक़ात में अशरफ़ुल मख़्लूक़ात का सेहरा इन्सान के सर पर सजाया। इन्सान के जद्दे अमजद ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को अपने दस्ते क़ुदरत से पैदा फ़रमा कर फ़िरिश्तों से इन्हें सज्दा करवाया और फिर इन्हें ज़मीन में अपनी ख़िलाफ़त अ़ता फ़रमाई। येह सब मक़ामो मर्तबा इन्हें उस इल्म की फ़ज़ीलत के सबब ह़ासिल हुवा जो **अल्लाह** पाक ने इन्हें अ़ता फ़रमाई और येह इतनी अ़ज़ीम ने'मत है कि जो भी इसे सच्ची निय्यत के साथ ह़ासिल करता है वोह महरूम नहीं रहता और इसे ह़ासिल करने वाले को सब से बेहतरीन व उ़म्दा चीज़ जो मुयस्सर आती है वोह **अल्लाह** की अ़ज़मतो शान की मा'रिफ़त है और जिसे **अल्लाह** पाक की पहचान ह़ासिल होती है उसे ख़ौफ़े ख़ुदा की ने'मत मिल जाती है। जैसा कि पारह 22 **सूरतुल फ़ातिर** की आयत नम्बर 28 में इर्शाद होता है : ﴿اِنَّمَا یَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا﴾ (پ22، فاطر، آیت:28) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ''**अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।''

क्या शान है सिद्दीक़े अक्बर की

ह़ज़रते अ़ल्लामा मह़मूद बिन अ़ब्दुल्लाह हुसैनी आलूसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तफ़्सीरे रूहुल मआ़नी में इर्शाद फ़रमाते हैं कि बा'ज़ अक़्वाल के मुत़ाबिक़ येह आयते करीमा मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه के बारे में नाज़िल हुई कि आप पर ख़ौफ़े ख़ुदा का ग़लबा था। (تفسیر روح المعانی، پ22، فاطر، تحت الآیۃ:28، 11/499)

अमीरे अहले सुन्नत मन्क़बते सिद्दीक़े अक्बर में अ़र्ज़ करते हैं :

यक़ीनन मम्बए ख़ौफ़े ख़ुदा सिद्दीक़े अक्बर हैं हक़ीक़ी आ़शिक़े ख़ैरुल वरा सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

अल्लाह पाक की गवाही के साथ उ़लमाए किराम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! उ़लमाए किराम की शान का क्या कहना, **अल्लाह** पाक अपने साथ उ़लमाए किराम की गवाही के बारे में क़ुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْۙ وَ مَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ﴾ (پ13، الرعد:43) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ''तुम फ़रमाओ **अल्लाह** गवाह काफ़ी है मुझ में और तुम में और वोह जिसे किताब का इ़ल्म है।''

आ़लिमे रब्बानी की एक अ़लामत

ह़क़ीक़ी आ़लिमे रब्बानी के नज़्दीक आख़िरत दुन्या से ज़ियादा अहम्मिय्यत की ह़ामिल होती है, वोह जल्द फ़ना हो जाने वाली ज़िन्दगी के मुक़ाबले में हमेशा बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी को तरजीह़ देता है चुनान्चे क़ारून जो कि बहुत मालदार था एक मरतबा बड़ा सज धज कर अपने लाउ लश्कर के साथ निकला तो इस की ज़ेबो ज़ीनत देख कर बा'ज़ ईमान वाले कहने लगे : काश ! हमें भी ऐसी शानो शौकत और मालो दौलत मिल जाती जैसी क़ारून को दुन्या में मिली है, बेशक येह बड़े नसीब वाला है। इस पर उस वक़्त के उ़लमाए रब्बानिय्यीन ने उन को मुख़ातब करते हुए जो फ़रमाया उसे क़ुरआने करीम में कुछ यूं बयान किया गया है : ﴿وَ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا﴾ (پ20، القصص:80) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** ''और बोले वोह जिन्हें इ़ल्म

दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी **अल्लाह** का सवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे।''

इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस आयते मुबारका में बयान फ़रमाया कि आख़िरत की क़द्रो मन्ज़िलत इल्म के ज़रीए मा'लूम होती है। और इस आयत में ज़ोहद (या'नी दुन्या से बे रग़बती) को उलमाए किराम की तरफ़ मन्सूब किया गया है और ज़ाहिदीन की ख़ूबी येह बयान की गई है कि वोह इल्म की दौलत से मालामाल होते हैं।

(احیاء العلوم، 1/19، 4/270)

हक़ीक़त तो येह है कि उलमाए रब्बानिय्यीन के नज़्दीक उन का माल उन का इल्म है जैसा कि हज़रते ज़ुबैर बिन अबू बक्र رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं इराक़ में था, मेरे वालिद ने मुझे पैग़ाम भेजा कि इल्म को लाज़िम कर लो ! अगर ग़रीब हो तो येह तुम्हारा माल है और अगर ग़नी हो तो तुम्हारा जमाल है। (حدیث ابی نُعیم عن ابی علی الصواف، ص7، حدیث:6)

मा'लूम हुवा कि दुन्यादारों की दुन्या को लालच की नज़र से देखना और उन्हें मिलने वाली दुन्या की तमन्ना करना ग़ाफ़िल लोगों का काम है जब कि अहले इल्म हज़रात दुन्या से बे रग़बत रहते, आख़िरत में मिलने वाले सवाब पर नज़र रखते और येह सवाब पाने की उम्मीद रखते हुए नेक आ'माल करते और गुनाहों से बाज़ रहते हैं और इस के साथ साथ दूसरों को भी दुन्या के ऐशो इशरत के हुसूल की तमन्ना करने की बजाए उख़्रवी सवाब पाने के लिये कोशिशें करने की तरफ़ राग़िब करते हैं। (तफ़्सीरे सिरातुल जिनान, पारह : 20, अल क़सस, तहतल आयह : 80, 7/328)

अल्लाह करीम हमें फ़क़त अपनी रिज़ा के लिये इल्मे दीन हासिल करने की सआदत अता फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अगले हफ़्ते का रिसाला